ISSN : 2229-5550

- वास्तव में साहित्य और संस्कृति इस दृष्टि से परस्पर परिपूरक हैं कि जहाँ-कहीं संस्कृति का विकास आरम्भ हुआ कि साहित्य सांस्कृतिक तत्त्वों को अपनाकर उनका विश्लेषण करते हुए उन्हें सरस विधि से सर्वसाधारण के लिए सुलभ बनाता है। संस्कृति के सैद्धान्तिक पक्ष को व्यावहारिक रूप देने का श्रेय साहित्य को ही मिलता है। हम कह सकते हैं कि साहित्य संस्कृति की प्रयोगशाला है, जिसमें सांस्कृतिक तत्त्वों की व्यावहारिक योग्यता का विश्लेषण होता है। संस्कृति के जिन तत्त्वों को साहित्यकार या आलोचक विशेष उपयोगी पाते हैं, उनका संवर्धन करते हैं और इस प्रकार भावी पीढ़ियों के लिए सुसंस्कृति का परिचय साहित्यिक ग्रन्थों से उपलब्ध होता है।

- आधुनिक युग में भारत और भारतवासियों की सांस्कृति और चारित्रिक छवि अपने प्राचीन गौरवशाली उत्कर्ष के अनुरूप नहीं विकसित हो पा रही है। आज के कतिपय आचार्यो और स्नातकों की कार्य परायणता और सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ बुद्ध की चारुचरितावली के आदर्श पर विकसित हो तो भारत को एक बार पुनः विश्वगुरु-पद की प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

- भारत अतिशय विशाल देश है। इसमें आज भी नाना प्रकार के धर्म, भाषा और आचार-व्यवहार को अपनाए हुए जन-समुदाय बसते हैं। फिर भी हम कह सकते हैं कि भारत के निवासी एक समाज की रचना करते हैं, क्योंकि उन सबकी एक राष्ट्रीयता है।

रामजी उपाध्याय

प्रकाशक
नाट्य परिषद, संस्कृत विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
सागर (म. प्र.) पिनकोड - 470003

नाट्यम् 91-94
रामजी उपाध्याय का नाट्य साहित्य

नाट्यम् 91-94

रामजी उपाध्याय का नाट्य साहित्य

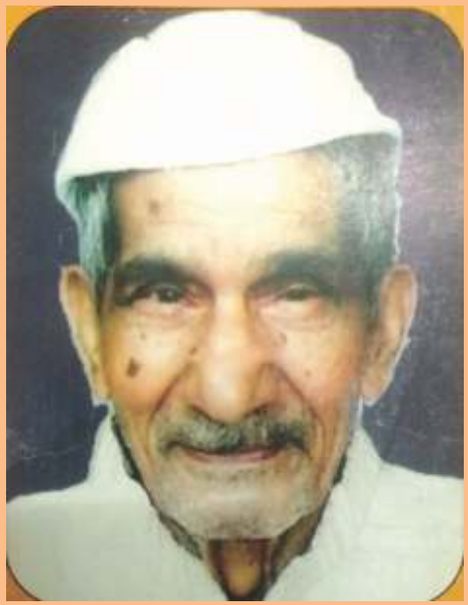

राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त करते हुए

व्याख्यान देते हुए

सागर विश्वविद्यालय से डी.लिट. की उपाधि प्राप्त करते हुए